गम के समंदर में खुशियों की मोती

✍ संजीव मण्डल

(1)

कविता के गाल पर झन्नाटेदार झापड़ पड़ा। वह कई कदम हिल गई और गिरते-गिरते बची। उसका दोष यह था कि उसके कमर से मिट्टी का घड़ा जो वह पानी से भरकर ला रही थी वह गिरकर चकनाचूर हो गया था। कविता ने न रोने की लाख कोशिश की पर उसकी रुलाई फूट पड़ी।

"हरामी! तेरे बाप को आने दे। एक ही घड़ा था, वह भी तोड़ दिया। अपनी खोपड़ी में पानी भरकर लायेगी अब।"

कविता सिसकती रही। कविता की बूढ़ी दादी बाहर का हंगामा सुनकर झोपड़ी से बाहर दौड़ती सी आई। क्या हुआ यह जानने में दादी को कुछ ही पल लगे। गीली जमीन पर टूटे पड़े घड़े के टुकड़ों और सिसकती कविता के लाल गाल को देखकर दादी सब समझ गई।

कविता फूल सी कोमल और कलियों के उम्र की थी। इस छोटी सी लड़की की ऐसी हालत उसके माँ के गुजरने के बाद भी नहीं हुई थी। पर जब बाप दूसरी शादी कर लाया तब उसके किस्मत के सितारें बूझ गए। हर रोज खड़ी-खोटी सुनना, लात-झापड़ खाना उसकी किस्मत बन गई थी। दादी सोचती उसके रहते ही ऐसी हालत है उसके मरने पर न जाने बच्ची को यह डायन जिंदा भी छोड़े या नहीं।

घड़े में पानी का वजन और दिनों को तो कविता सम्भाल लेती थी पर कल रात से ही कविता को बुखार था और कमजोरी महसूस हो रही थी। छलकते घड़े को वह किसी तरह सम्भाल-सम्भालकर ला तो रही थी पर आँगन में पहुँचकर घड़े को उतारते वक्त कविता को चक्कर सा आ गया और घड़ा हाथ से छूट गया और यह सर्वानाश हो गया।

(2)

"अरे सुनती हो, रामेश्वर की लड़की आई है, जा दुकान खोलकर सामान दे दे।" महेश दादा ने अपनी बूढ़ी पत्नी से कहा।

कविता दादी मानो सपने से जागी। अपने बचपन का वह दिन कविता दादी कितनी ही बार याद करती है। हर हरकत उसके आँखों के आगे सपने की तरह आ जाती थी- सपनों की विचित्रताओं से खाली बिल्कुल ज्यों की त्यों। बचपन में सौतेली माँ के आने के बाद न जाने कितने ही दिन उसे मार खानी पड़ी, भूखा रहना पड़ा। पर वह दिन उसके मस्तिष्क से मिटाए नहीं मिटता।

"अरे भानु तुझे क्या चाहिए इस बेला?" खाना खाने का समय हो गया था या यों कह सकते है कि बीतने को ही था। दोपहर बाद का यह समय महेश दादा अपना किराने का दुकान बंद ही रखते थे। खाना-वाना खाकर महेश दादा थोड़ा आराम करते, गाँजा फूँकते फिर कही दुकान खोलते। पर लोगों को चींजों की जरूरत तो वक्त-बेवक्त पड़ सकती थी इसलिए कभी-कभी दुकान खोलकर सामान देना पड़ता था।

कविता दादी ने दुकान खोली, भानु को सामान दिया। पैसे लिए। दुकान बंद करके खाना खाने चली गई। महेश दादा के पास आय का सबसे मजबूत साधन यह किराने की दुकान ही था। घर में कोई था नहीं, महेश दादा बूढ़े हो चुके थे, खेती की कुछ जमीन थी जो अब बँटाई पर चढ़ाकर गुजारा कर रहे थे। कविता दादी को महेश दादा बहुत प्यार करते थे। बच्चे भले ही उन्हें न हुए हो, पर उन्होंने कभी कविता दादी को इसके लिए एक भी शब्द नहीं कहा था। कविता दादी को जीवन में बहुत से दु:ख झेलने पड़े थे, पर महेश दादा के साथ वे अपने आप को सुखी मानती थी क्योंकि भले ही अभावों के बीच ही जीवन बीता, वे महारानी की तरह नहीं रह पाई पर महेश दादा के साथ उन्होंने खुशी-खुशी ही अपनी 40 साल की शादी-शुदा जिंदगी बीता दी है।

(3)

चौदह-पंद्रह साल की हुई थी जब पिता ने गुवाहाटी के पाण्डु में किसी अमीर के घर कविता को काम करने भेज दिया था। पिता ने कहा था-

"देख बेटी, मेरे पास इतने पैसे नहीं की तेरी शादी का खर्च निकाल पाऊँ। तू इस घर में काम कर और जितने हो सके पैसे इकट्ठी कर। तेरा मालिक अच्छा आदमी है। खाने-पीने को भी देगा, कपड़े-लत्ते भी देगा। पैसा भी देगा।"

कविता ने सिर झुका लिया था। फिर कविता उसी घर में काम करने लगी। उसे लगा घर में जो वह सूरज उगने से पहले उठकर काम पर लग जाती थी, रात ढलने तक काम करती रहती थी- यहाँ उससे कम ही मेहनत करनी पड़ती है। अब में कम से कम अपनी कमाई खाऊँगी।

वह तीन-चार महीने ही काम कर पाई थी कि उसके लिए वहाँ काम करना बहुत मुश्किल हो गया था। मालिक-मालकिन अच्छे थे। उसके प्रति स्नेह भी दिखाते थे। पर मालिक का बूढ़ा बाप जिस गलीज निगाहों से कविता को घूरता था, कविता उसे सह नहीं पा रही थी। फिर कुछ दिनों से बीच-बीच में बूढ़ा चाय देते वक्त कविता के हाथ पकड़ लेता था। कविता सोच रही थी काम छोड़ देगी। पर मालिक-मालकिन को इसकी वजह क्या बतायेगी। क्या वह कह पायेगी साहब आपके बाप हरामी है। एक नौकरानी की कोई भी बात आखिर क्यों कोई मानेगा।

एक दिन कविता बूढ़े का कमरा साफ करने घुसी। देखा बूढ़ा सो रहा था। वह कमरा झाड़ू लगाने लगी। बूढ़ा सोने का नाटक कर रहा था। कविता झुककर झाड़ू लगा रही थी। बूढ़ा कविता को पीछे से देख रहा था। कविता का यौवनपुष्ट शरीर वह लोलुपता से देखता रहा। कविता झाड़ू लगाते हुए कमरे के एक कोने की तरफ बढ़ी। बूढ़े ने पीछे से आकर कविता को जकड़ लिया। कविता चौंक गई, वह कुछ करती उससे पहले ही बूढ़े ने इस तरह कविता को जकड़ा कि वह छूटने की जी तोड़ कोशिश करते हुए भी छूट नहीं पा रही थी। उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि ऐसे मरियल बूढ़े में इतनी ताकत। बूढ़ा कविता को चूम रहा था। कविता ने चीखते हुए बूढ़े को जोर का धक्का दिया। बूढ़ा लड़खड़ाता हुआ जमीन पर गिर गया। गिरते ही बूढ़ा कराह उठा। कविता रोते हुए भागी और भागती रही। पीछे से बूढ़े की आवाज सुनी-

"साली तेरा जीना मुहाल न कर दिया तो देखना।"

मालिक-मालकिन बच्चों के साथ पड़ोस में पूजा में गए हुए थे। कविता भागती गई। उसे अपने गाँव का रास्ता थोड़ा-थोड़ा पता था। पाण्डु से मिर्जा तक की दुरी उसने पैदल तय की। सवारी के लिए न उसके पास पैसे थे, न साहस। सूरज ढलते वक्त वह घर पहुँची। उसके छोटे भाई-बहन अपनी दीदी को देखकर खुशी से चिल्लाने लगे।

अगले दिन मालिक-मालकिन कविता के घर आए। पूछा भी क्या बात है? क्या हुआ? वह क्यों वहाँ से बिना बताए चली आई? न कविता ने कुछ बताया न वापस जाने को राजी हुई।

(4)

"क्या तुम मुझसे डरती हो, मैं खोफनाक हूँ?"

कविता चुप रही। श्रीकांत उसे देखता रहा। फिर वह मुस्कराने लगा।

"तुम इतना डरती हो मुझसे, मैं बाघ नहीं हूँ।"

आज दो महीनें हो गए है कविता को गाँवबूढ़ा के घर काम करने आए। परसो ही श्रीकांत आया है गुवाहाटी से। छरहरा युवक, देखने में बहुत ही सुंदर। श्रीकांत गाँवबूढ़ा का छोटा बेटा है। घर के लोग उसे बाबा कहकर पुकारते है। दोनों भाभियाँ अपने देवर पर जान छिड़कती है। वह शहर से बहुत से उपहार लेकर आया है। घर के काम करते हुए कविता ने आते-जाते श्रीकांत को देखा है। पर वह श्रीकांत के देखते ही सिर झुका लेती है। पर ऐसे सुदर्शन युवक को देखने का मोह वह छोड़ नहीं पाती। इसलिए बीच-बीच में सबकी नजर बचाकर उसे निहारती है।

"बाबा भात परोस दिया है। चले आओ।"

बड़ी भाभी श्रीकांत को पुकारती है। श्रीकांत कविता के पास से रसोई घर चला जाता है। कविता की जान में जान आती है। उसकी तो साँसे ही नहीं चल रही थी। वह बर्तन धोने लग जाती है।

(5)

कविता चाँदनी रात में श्रीकांत की बाहों में पड़ी हुई है। श्रीकांत उसे देख रहा है, उसकी पलकों को होठों से छू रहा है।

"तू मुझसे शादी करेगी?"

"आप मुझसे शादी करेंगे?"

"सवाल का जबाव सवाल नहीं होता।"

"मैं तो बहुत किस्मत वाली हूँगी।"

"तो मैं साल भर बाद पढ़ाई पूरी करके वापस आ जाऊँ फिर मैं पिताजी से हमारी शादी की बात करूँगा।"

"वे मानेंगे?"

"तुझे कोई शक है?"

"मैं आपलोगों के घर काम करने वाली नौकारनी हूँ।"

"फिर ऐसा मत कहना।"

"पर....."

"कहा न।" श्रीकांत ने कविता के होठों पर होठ रखकर चुप करा दिया।

"ठीक है।"

श्रीकांत और कविता पूनम के चाँद तले भविष्य की योजनाएँ बनाते हुए पहली बार एक दूसरे के हो गए। कविता ने अपने जीवन के प्रथम पुरुष को अपना तन सौंप दिया।

दो दिन बाद श्रीकांत गर्मियों की छुट्टियाँ बिताकर गुवाहाटी चला गया।

दिन बीतने लगे। श्रीकांत के लौटने की बात होने लगी। कविता खुश होने लगी। श्रीकांत की शादी की बात होने लगी। कविता का जी घबराने लगा। आखिर वह दिन भी आया जब श्रीकांत वापस आया। श्रीकांत

आया तब कविता उसके कमरे के दरवाजे के पास ही खड़ी थी। पर श्रीकांत ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। कविता का दिल टूट गया।

फिर वह दिन भी आया जब श्रीकांत की शादी हो गई।

कविता ठगी-ठगी सी रह गई। पर वह किस बूते श्रीकांत से कुछ कहती या उसके परिवार वालों से कुछ कहती। उसने तो चाँद को छूने की नहीं पाने की कामना की थी। पर क्या चाँद ने उसे अपने आप को सौंपने का वादा नहीं किया था। कविता कुछ नहीं बोली। अकेले में रोयी और खूब रोयी। पर धोखे का बदला वह क्या लेती। गाँवबूढ़ा के घर से काम छोड़ कर आ गई।

सौतेली माँ ने कुहराम मचाया कि काम छोड़-छोड़ के आ जाती है, हम अनाज इकट्ठा करे और इस चूहे के बिल में झोंक दे जैसे हमे और कोई काम नहीं, हम महामूरख है। आज कविता कितनी अकेली है। दादी भी साथ छोड़ कर उस लोक में जा चुकी है।

(6)

पहाड़ी ज्यादा ऊँची नहीं थी। नीचे झरने थे कई। एक झरने के नीचे गड्ढा सा बना था। गाँव की औरते-लड़कियाँ यही से पानी भरती थी। नदी दूर थी। यही आसान था आना और पानी भी बहुत साफ और मीठा था। कविता दो घड़े ले आई थी। पानी ठण्डा था। वसुधा पानी भर रही थी। उसके साथ एक युवक था जो सूखी लकड़ियों की एक भारी गठरी के पास खड़ा था। वसुधा ने बात आरम्भ की।

“तूने गाँवबूढ़ा के घर का काम छोड़ दिया।”

“हाँ।” कविता की आँखों में वेदना उमड़ आई थी।

फिर इधर उधर की कुछ बातें करने के बाद बोली-

“वे मेरे भइया है। तेरे को पसंद करते है।”

कविता फटी-फटी आँखों से वसुधा को देखने लगी। वह युवक उसकी तरफ देखे जा रहा था। वसुधा अपनी रो में बोलती गई कि बहुत दिनों से उसके भइया कविता को पसंद करते है। फिर आखिर में उसने पूछा-

“मेरी भाभी बनेगी?”

कविता ने अपने सहेलियों को इस प्रस्ताव के बारे में बताया तो सभी ने यही कहा-

“महेश अच्छा लड़का है, तेरे श्रीकांत की तरह दिखने में सुंदर और पढ़ा-लिखा न हो पर तेरे को सुखी रखेगा।”

बिल्ली ने उनकी थाली में पड़ी मछली पर झपट्टा मारा तो कविता दादी चौंककर वर्तमान में आ गई। जूठे बर्तन लेकर माँजने के लिए हैण्ड पम्प के किनारे चली गई।

संपर्क-सूत्र
पीएच.डी शोधार्थी, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय
8135054304
666mandal@gmail.com

neglimpse.com